Sixteenth Loksabha

an>

Title: Regarding water crisis in the country.

श्री नारायणभाई काछड़िया (अमरेली): माननीय अध्यक्ष जी, मैं जीरो आवर में आपके माध्यम से सदन का ध्यान बहुत ही महत्वपूर्ण विषय की ओर दिलाना चाहता हूं। विश्व में पेयजल की कमी का संकट मंडरा रहा है जो कहीं गिरते हुए भूजल स्तर, कहीं नदियों के प्रदूषित पानी और कहीं सूखते-सिमटते तालाब और झील के रूप में नजर आ रहा है। इसका कारण पानी के स्रोतों का भारी दोहन है। ऐसा लगता है इनको सुरक्षित रखने का कार्य जैसे त्याग ही दिया गया हो । भूमंडल की गर्मी बढ़ने के कारण पृथ्वी का जलस्तर गिर रहा है, प्रति वर्ष 1,60,000 अरब क्युबिक मीटर की कमी दर्ज की गई है।

बदलते पर्यावरण के कारण कई स्थानों का रूप बदल चुका है। गुजरात राज्य में भी पेयजल का संकट उत्पन्न हो गया है। गुजरात के जिन इलाकों में जहां 150 फीट नीचे जल मिल रहा था, वहां आज बेहिसाब दोहन के कारण 500 से 1000 फीट गहरा बोरिंग करना पड़ रहा है। गुजरात और सौराष्ट्र में कई क्षेत्रों में सूखा पड़ा हुआ था । लेकिन, पिछले दो दशक में एक लाख से ज्यादा चेक डैम और किसानों के खेत में खेत तलावड़ी को सिंचाई के लिए खोदे जाने की परम्परा को जब छोड़ दिया गया था, तो वर्ष 1995 में गुजरात में जब भाजपा की सरकार आई तो सभी मुख्यमंत्रियों ने पानी रोकने का काम किया । वर्ष 1995 से पहले 3500 से ज्यादा गांवों में टैंकर से पानी दिया जाता था । मैं आपके माध्यम से बताना चाहता हूं कि हमारे तत्कालीन मुख्यमंत्री और देश के लोकप्रिय नेता और हमारे देश प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में गुजरात में "सुजलाम सुफलाम योजना" शुरू की गई थी । आज उसी योजना को हमारे गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री विजय भाई रूपाणी जी ने अपने नेतृत्व में पिछले वर्ष 1 मई से "सुजलाम सुफलाम योजना" को तारांकित किया और 31 मई तक, एक महीने में तालाब का गहरीकरण करने का काम किया । 15 हजार से ज्यादा तालाबों और 13 लाख से ज्यादा डैमों का काम किया तथा 13 लाख से ज्यादा घनमीटर का पानी रोकने का काम किया । गुजरात सरकार ने किसानों के लिए मिट्टी देने का काम भी फ्री में किया । किसान ने जब उस मिट्टी को खेत में डाला तो वह सड़ी हुई मिट्टी खेत में खाद के रूप में काम आयी, जिससे फसल का उत्पादन भी बढ़ा। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि अगर पूरे देश में गुजरात पैटर्न लागू किया जाए तो पूरे देश में पानी रोकने का काम किया जा सकता है।

माननीय अध्यक्ष: श्री शरद त्रिपाठी, कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल, डॉ, किरिट पी.सोलंकी, श्री भैरों प्रसाद मिश्र, डॉ.कुलमणि सामल को श्री नारणभाई काछड़िया द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।